कहानी

बदलते संदर्भ

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

हिंदी अध्ययन विभाग
मानसगंगोत्री, मैसूरु

प्रतिभा मुदलियार ,बदलते संदर्भ, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(66-68)

बाईस मई, 'सेपरेशन' के कागजात पर दस्तखत हो गए और हम दोनों की अकेली यात्रा आरंभ हुई…

पर आज से ठीक एक माह पूर्व -२० अप्रैल..

कितनी संभावनाओं के साथ लौटी थी मैं!

रॉबर्ट, तुम्हें कुछ याद है या कुछ भी याद ना रखना ही सबसे बड़ी उपलब्धि समझते हो तुम?

१८ अप्रैल को फादर डिसूजा ने सेपरेशन के कागज़ात पर दस्तखत कर लेने के लिए बंबई बुला लिया था और मैं तनावपूर्ण मानसिकता से मुक्ति पाने के लिए बंबई चली आई थी। सोचती हूँ घटनाएं ऐसी क्यों घटित होती हैं कि संवेदना वेदना बन जाती है?

चर्च में फादर डिसूजा आंखो में प्रतीक्षा लिए खड़े थे। मैं पहुंची। हर बार की तरह इस बार भी तुम देर से ही आए। मुझे प्रतीक्षा करवाना तुम्हें हमेशा से अच्छा लगा है शायद मेरे प्रति उपेक्षा जताने का सबसे आसान तरीका। तुम्हारा मुझसे बात करने का सवाल ही नहीं था। तुम भी सीधे फादर के पास ही गए। फादर ने भी बिना भूमिका के कहा था, 'यस, मि. रॉबर्ट योर पेपर्स आर रेडी।'

लगभग आधे घंटे तक तुम उन कागजातों को पढ़ते रहे और अचानक कुर्सी से उठकर खड़े हो गए और कहा, 'फादर, आई विल वी बैक इन एन आवर।' और मेरी ओर बड़ी औपचारिकता से देखकर केवल इतना ही कहा, 'एक्सक्यूज़ मी।' और उत्तर की अपेक्षा किए बगैर चले गए।

सेपरेशन हम दोनों का हो रहा था, लेकिन वहां मेरा होना तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण क्या सामान्य भी नहीं था। तुम्हारा आना, कागजात पढ़ना और चले जाना मैं एक दर्शक भांति देख रही थी। लेकिन भीतर एक उबाल करवटें ले रहा था। अपमान- शब्दों के बिना किया गया अपमान- और मैं चुप्पी साधे सहती जा

रही थी। फादर डिसूजा ने मेरी ओर देखा और कितनी शांति से कहा था, 'टेक इट इजी माई चाईल्ड।' और इस स्थिति में भी फादर के इस वाक्य पर मुझे हंसी आई थी। फिर प्रतीक्षा- लगता है इसी में जिन्दगी का रास्ता तय करना है। अनेक सवालों का एक उत्तर-सेपरेशन- जिसके लिए मैं आई थी- वहां पता नहीं तुम क्या सोच समझ रहे थे। और आखिर डेढ़ घंटे बाद तुम्हारा फोन आया था- तुम नहीं, और कितनी शांति से कह रहे थे, 'मैं अभी इन कागजातों पर दस्तखत कर नहीं सकता, फादर आई एम रियली सॉरी।'

इतने बड़े अपमान के बाद वहां रहना अब मुनासिब नहीं था। तुम्हारी ही मर्जी से संबंधों को अलग किया जा रहा था फिर ऐसा व्यवहार? तुम्हारे द्वारा ही जब सब कुछ होना है तब भला मैं कहां आती हूँ? मेरी समझ से परे था सब कुछ! और मैं शाम को गाड़ी से ही बेलगाम लौट रही थी।

लेकिन इस घटना के कुछ ही घंटे बाद जो घटित होने जा रहा था उसकी धुंधली भी संभावना नहीं थी। वह संयोग कैसा नाट्यपूर्ण था !

उसी दिन शाम को गाड़ी से मैं घर लौट रही थी। भाग्य से जगह मिल गई। उत्सुकतावश रिजर्वेशन की शीट देखी और तुम्हारा नाम पढ़ते ही पसीने से तरबतर हो गई। समझ नहीं पाई यह कैसा संयोग है। तुम मेरे ही डिब्बे में और मेरे ही शहर चले आ रहे थे। एक क्षण सोचा वापस लौटूं, पर लौटना भी संभव नहीं था।

मैं महिला रो में बैठी रही। अपने मन की बात समझना मुश्किल था। तुमने भी अब तक मुझे देख लिया था। बात करने की आवश्यकता भी नहीं थी। अजनबी से हम एक ही बोगी में बैठे थे। मेरी साथवाली नारी ने पूछा,

'आप अकेली ही हैं?'

और मैं कैसे गर्व से कह गई थी, 'नहीं, मेरे पति भी मेरे साथ हैं।' उसके संभावित प्रश्नों के कितने सही पर झूठे उत्तर मैं देती गई थी। कर्जत स्टेशन पर मैं दरवाजे पर कड़ी तुम्हें ही ढूंढ रही थी। अब डर नहीं लग रहा था। और तुम भी कैसे दौड़ते मेरे पास आए थे और कितनी सादगी और प्यार से पूछा था,

'व्हॉट आर यू लुकिंग फॉर!'

'सम स्नैक्स।' और तुम दौड़कर मेरे लिए स्नैक्स ले आए थे।

कुछ क्षण बातें हुई और फिर हम अपनी सीट पर··· भावना का उबाल यही से शुरू हुआ था। जानती नहीं वह भावना कौन सी थी? मिरज स्टेशन पर गाड़ी बदलकर बेलगाम जाया जाता है। रात सोचने में ही काटी। सुबह, तुम लेडीज में झाँक गए और मुझे उठाया। मेरा सूटकेस उठा लिया और एक पति सा आदेश देते हुए कहा 'चलो।' मैं भी कैसी यंत्रवत सहचरी सी तुम्हारे संग हो ली थी। दूसरी ट्रेन में एक साथ ही बैठे। कितनी ही बातें की।

बातों का सिलसिला याद नहीं रहा-पर कितने सालों बाद तुम्हारी गोद में सिर रखकर सो गई थी- तुम्हारी उंगलियां मेरे बालों को सहला रही थीं। मैं सब कुछ भूल गई थी। वह सब जो घटित हुआ और यह भी कि हम दोनों 'सेपरेशन' के लिए फादर डिसूजा के पास गए थे। और तुम? मैं नहीं जानती।

बेलगाम आने तक हम किस विश्व में थे? उसका आनंद मैं शब्दों में नहीं बांध सकती। शायद ऐसे ही अनबुझे क्षणों की धरोहर पर ही आगे का रास्ता तय करना है। स्टेशन पर मेरी सूचना के अनुसार पप्पा और सायमन आए थे। हम दोनों को साथ उतरते और साथ ही आते देखकर कैसी ख़ुशी दौड़ी थी उनके चेहरे पर। सोचा होगा सेपरेशन समझौते में बदल गया हो - अच्छा ही है। पर तुमने मेरा सूटकेस पप्पा के सामने रखी और बिना कुछ कहे चले गए - पीछे मुडकर देखने की आवश्यकता भी नहीं समझी। पप्पा और सायमन मेरी ओर प्रश्नांकित आंखों से देख रहे थे।

और मैं··· भावना को संभावना में बदलते देख रही थी। स्थितियों से समझौता करने की सोच रही थी···. और तुम संदर्भो को केवल अपने अनुसार बदल ले रहे थे। यही तो फ़रियाद है तुमसे, 'क्यों बदल देते हो तुम सन्दर्भों के अर्थ? यदि तुम भावना को अंजाम नहीं दे सकते तो भावना को जन्म ही क्यों देते हो? जानते हो भावना में जीने वाले बदलते सन्दर्भों में एक नए निर्माण की संभावना करते हैं ···. '

लेकिन तुम?

तुम गिरगिट से भी गए गुजरे हो···.

मेरे नए निर्माण का सपना आंसुओं में बहा नहीं लेकिन उसके ठंडेपन से जम गया है। ठीक एक महीने बाद सेपरेशन के कागजात पर दस्तखत हो गए और मैं टूटे रिश्ते की टूटी डोर संभालती विवश···.

पृथक होना -पृथक रहना आसान होगा···.

पर भावना से, संवेदना से, स्मृति से पृथक होना क्या उतना ही आसान होगा जितना सन्दर्भों का बदल जाना और बदलते सन्दर्भों में सपनों का टूट जाना···

****